



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

र्यूमैटिक बुखार एवं स्ट्रेप्टोकोकल रैक्टिव गठिया

के संस्करण 2016

र्यूमैटिक बुखार क्या है?

यह क्या है?

र्यूमैटिक बुखार गले के स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया से संक्रमण के कारण शुरु होता है। स्ट्रेप्टोकोकस बैक्टीरिया की अनेक प्रजातियों में से केवल ग्रुप ए ही इस बीमारी का कारक है। गले में स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण स्कूल पढ़ने वाले बच्चों में आम बात है किन्तु यह जरूरी नहीं की हर बच्चे को र्यूमैटिक बुखार की बीमारी हो। इस बीमारी में हृदय में सूजन से वह स्थायी रूप से क्षतग्रस्त हो सकता है। सर्वप्रथम बच्चे को जोड़ों में आंशिक दर्द एवं सूजन महसूस होती है, तत्पश्चात कार्डाइटिस (हृदय में सूजन) एवं मस्तष्ठीकी सूजन से असामान्य अनैच्छिक गती विकार (कोरिया) जैसी समस्या हो सकती है। इसके अतिरिक्त त्वचा पर चकत्ते व गांठे पड़ सकती है।

यह कतिनी प्रचलति है?

पछिल्ले वर्षों में ऐंटीबायोटिक दवाइयों के अभाव में गर्म प्रदेशों में यह बीमारी अधिक प्रचलति पाई जाती थी। ऐंटीबायोटिक उपलब्ध होने से फैरनिजाइटिस के उपचार के पश्चात इस बीमारी की संख्या में कमतरता देखी गई, परन्तु इस समय भी दुनिया भर के 5 से 15 वर्ष आयु के बच्चों में यह बीमारी अभी भी पाई जाती है एवं उनमें से कुछ बच्चों को हृदय विकार का कारण बनती है। जोड़ों पर प्रभाव के हेतु इस बीमारी को बच्चों के गठिया रोग में सम्मिलित किया गया है। र्यूमैटिक बुखार का समस्या विभिन्न देशों के अन्तर्गत असमान मात्रा में पाई जाती है।

कई देशों में इस बीमारी का एक भी मरीज नहीं पाया गया और अन्य कई देशों में इसकी मात्रा मध्यम से अधिक प्रतिलक्षित देखी गई है (प्रति वर्ष 1,00,000 व्यक्तियों के प्रति 40 से अधिक व्यक्तियों)। दुनिया भर में र्यूमैटिक हृदय विकार के 15 मिलीयन मरीज अनुमानित है जिसमें से प्रतिवर्ष 2,82,000 नये हैं और 2,33,000 मृत हैं।

इस बीमारी के क्या कारण है?

गले के ग्रुप ए स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण के प्रति असामान्य प्रतिरक्षण प्रणाली के कारण यह बीमारी निर्मित होती है। गले में संक्रमण के पश्चात और र्यूमेटिक बुखार के लक्षण निर्मित होने से पहले व्यक्ति कई दिनों तक सामान्य रह सकता है।

गले के संक्रमण के उपचार हेतु, प्रतिरक्षाप्रणाली की उत्तेजना को कम करने एवं नये संक्रमण को रोकने में एंटीबायोटिक दवाइयों की जरूरत पड़ती है। हर नये संक्रमण से इस बीमारी का नया चक्र शुरू हो सकता है। इस प्रकार के नये चक्र की जोखिम र्यूमेटिक बुखार के पश्चात पहले 3 वर्ष में सर्वाधिक होती है।

क्या यह आनुवंशिक बीमारी है?

नहीं, यह आनुवंशिक बीमारी नहीं है क्योंकि यह माता-पिता से सीधे बच्चों में नहीं होती कन्ति एक ही परिवार के अनेक सदस्य इस बीमारी से ग्रसीत हो सकते हैं। इसका कारण स्ट्रेप्टोकोकल इनफेक्शन के प्रति लडने की क्षमता का अनुवांशिक होना है। स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण थुक एवं श्वसन स्त्राव द्वारा फैलता है।

मेरे ही बच्चे को बीमारी क्यों हुई? क्या इसकी रोकथाम की जा सकती है?

पर्यावरण व स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया इस बीमारी के प्रमुख कारण हैं लेकिन व्यावहारिक तौर पर यह बताना मुश्किल हो जाता है कि किसको यह बीमारी होगी। बीमारी एक असामान्य प्रतिरक्षा है जिसमें प्रतिरक्षण प्रणाली स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया के साथ-साथ मनुष्य की कोशिकाओं (विशेषतः जोड़ो एवं हृदय की) पर भी प्रहार करती है। स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया के कुछ खास प्रकार अतसिंवेदनशील व्यक्ति में र्यूमैटिक बुखार को निर्मित करते हैं। भीड़, संक्रमण के फैलाव का मुख्य पर्यावरण कारण है। र्यूमैटिक बुखार से बचाव के लिये स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया द्वारा गले के संक्रमण को जल्दी पहचान कर पेनिसिलीन जैसे एंटीबायोटिक इलाज से करना चाहिये।

क्या यह छुआ-छुत की बीमारी है?

र्यूमैटिक बुखार छुआ-छुत की बीमारी नहीं है परन्तु स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण एक व्यक्ति से दुसरे व्यक्ति तक आसानी से फैल सकता है। यह फैलाव भीड़-भाड़ वाले वातावरण जैसे घर, स्कूल व सेना के कैम्प इत्यादि में ज्यादा होता है। इस फैलाव को रोकने में कुछ सावधानियाँ जैसे हाथ धोना एवं संक्रमित व्यक्ति से दूर रहना आवश्यक होती है।

बीमारी के मुख्य लक्षण क्या है?

र्यूमैटिक बुखार में विभिन्न लक्षण हर मीरीज में अलग होते हैं। यह बीमारी स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया से गले में संक्रमण का इलाज न करने व अधूरा इलाज करने के कुछ दिन बाद होती है।

गले में संक्रमण के दौरान बुखार, गले व टांसिल में लाली और गर्दन में लम्फिनोड बड़े व

दर्दनाक हो सकते हैं कर्नितु यह लक्षण बच्चों व कषिरोरों में कभी-कभी बहुत हलुके या नहीं भी हो सकते हैं। शुरुआती संक्रमण के पश्चात बच्चा 2 से 3 हफते सामान्य रहता है। तत्पश्चात बच्चा बुखार व नमिनलखिति लक्षणों के साथ चकित्सक के पास आ सकता है।

गठिया

इस रोग में गठिया कई जोड़ों को कुछ समय के लयिे प्रभावति करता है (घुटने, कोहनी, एडी व कंधे)। प्रदाह एक जोड़ से दूसरे जोड़ की तरफ जाता रहता है कर्नितु गर्दन व हाथ के जोड़ कभी-कभार ही प्रभावति होते हैं। जोड़ों का दर्द असहनीय हो सकता है कर्नितु सूजन कम होती है। यह जानना जरुरी है कि दर्द ऐस्प्रेनि या दर्द नविरक दवाओं से बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।

कार्डाइटिज

मतलब है दलि में प्रदाह या सूजन। यह सबसे गंभीर लक्षण है। दलि की हृदयगति का आराम करते समय या सोते समय ज्यादा होना इसके लक्षण है। हृदय की धड़कन सुनकर हृदय पर प्रभाव का असर देखा जा सकता है। यह खराबी धीमें से तेज ध्वनि वाले मरमर के रुप में होती है तथा वाल्व की सूजन को दर्षति करती है जिसे एन्डोकार्डिटिस भी कहा जाता है। यदि हृदय की झलिली में सूजन आ जाये और पानी भर जाये तो उसे 'पेरीकार्डिटिस' कहा जाता है। यह पानी धीरे-धीरे सूख जाता है और अधिकतर कोई लक्षण पैदा नहीं करता है। गंभीर स्थिति में हृदय की कार्यशक्ति कमजोर हो सकती है जिसे इन लक्षणों से पहचाना जा सकता है जैसे खांसी, छाती में दर्द, हृदयगति तेज होना और साँस जल्दी-जल्दी आना। ऐसी स्थिति में जाँच व हृदय रोग वषिषज्ञ से सम्पर्क करना चाहयिे। पहला रयुमैटिक बुखार भी हृदय के वाल्व क्षतग्रस्त कर सकता है लेकनि अधिकतर यह समस्या लगातार रयुमैटिक बुखार के होने से होती है जिससे बढ़ती उम्र के साथ वाल्व खराब होने की संभावना बनती है। इससे बचाव करना हमारी प्राथमकिता होनी चाहएि।

कोरिया

कोरिया एक यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है नृत्य। इसमें दमिाग में अंगो(ग्रीक) की क्रियाओं का नियंत्रण करने वाली जगह पर सूजन आ जाती है। रयुमैटिक बुखार के 10 से 30 प्रतशित मरीजों में यह लक्षण देखा जाता है। गठिया एवं रयुमैटिक हृदय विकार से वषिरीत, बीमारी के बढ़ने पर ही कोरिया के लक्षण सामने आते हैं। 1 से 6 माह के बीच में गले में संक्रमण के बाद यह लक्षण प्रकट होता है। गंदी लखावट, कपड़े पहनने में दक्कित, चलने, खाने में दक्कित प्रारम्भिक लक्षण है। लक्षण का प्रभाव कम ज्यादा होता रहता है। साने के समय कम हो जाता है। लंबी थकावट होने पर लक्षण बढ़ जाता है। छात्रों में यह बीमारी पढ़ाई पर प्रभाव डालती है। एकाग्रता में कमी व उलझन होती है। सोम्य स्वरूप में यह लक्षण आसानी से नजरअंदाज हो सकते हैं। यह लक्षण आत्म सीमीत होता है लेकनि इसे सहायक ईलाज एवं समयानुरूप जांच की अवश्यकता होती है।

त्वचा के चकत्ते

रयुमैटिक बुखार के लक्षण में त्वचा पर चकत्ते, धब्बा, गांठ हो सकती है। यह चकत्ते लाल

रंग के गोलकार में होते हैं और दर्द हीन गाठ जोड़ों के आसपास पाई जाती है। त्वचा के लक्षण 5 प्रतिशत से भी कम लोगों में पाया जाता है। त्वचा के लक्षण हृदय के प्रदाह के साथ ही पाये जाते हैं। बुखार, थकान, काम में कमी, भूख में कमी, खून की कमी, पेट में दर्द, नाक से रक्तस्राव जैसे अन्य लक्षण पालकों को पारम्भिक लक्षणों में नजर आ सकते हैं।

क्या बीमारी सभी बच्चों में एक समान होती है?

हृदय की असामान्य धड़कन सुनाई देना, गठिया व बुखार वाले बच्चों में सामान्य लक्षण है। छोटी उम्र के बच्चों में कार्डीटाइटिस होती है लेकिन जोड़ों में दर्द कम होता है। कुछ मरीजों में कोरिया या तो अकेले या कार्डीटाइटिस के साथ होता है और इसकी समयानुरूप हृदयरोग विशेषज्ञ द्वारा जांच करना आवश्यक है।

क्या बच्चों की बीमारी बड़ों से अलग है?

र्यूमैटिक बुखार स्कूल के बच्चों या 25 साल से कम उम्र के लोगों की बीमारी है। 3 साल से कम उम्र के बच्चों में बहुत कम पाई जाती है। देखा गया है कि 80 प्रतिशत मरीज 5 से 19 साल के बीच होते हैं। यदि बिचाव के लिये पूरी दवा न ली गयी हो तो यह बीमारी वयस्कों में भी हो सकती है।